बारह भावना

(पं. भूधरदासजी कृत)

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ।।१ ।।
दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखन हार ।।२ ।।
दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ।।३ ।।
आप अकेलो अवतरे, मरे अकेलो होय।
यूँ कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय ।।४ ।।
जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय।
घर संपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ।।५ ।।
दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह ।।६ ।।
मोह-नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।
कर्मचोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं ।।७ ।।
सत्गुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमै।
तब कछु बनै उपाय, कर्म-चोर आवत रुकैं ।।८ ।।
ज्ञान-दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसैं नहीं, बैठे पूरब चोर ।।
पंच महाव्रत संचरन, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय-विजय, धार निर्जरा सार ।।९ ।।
चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ।।१० ।।
धन कन कंचन राजसुख, सबहिं सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान ।।११ ।।
जाँचे सुर तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।
बिन जाँचै बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन ।।१२ ।।